Golden Research Thoughts
International Recognition Multidisciplinary Research Journal
RNI : MAHMUL/2011/38887
ISSN No: 2231-5063
Impact Factor 2.2052 (UIF) [Yr. 2014]
3.4052 (UIF) [Yr. 2015]
4.6052 (UIF) [Yr. 2016]

GRT

Golden Research Thoughts

" विश्व की सर्वश्रेष्ठ लिपि, देवनागरी लिपि "

प्रा. रूकसाना एल. जमादार,
यु. ई. एस. महिला महाविद्यालय, हिंदी विभाग प्रमुख, सोलापुर (महाराष्ट्र) ।

सारांश :-

हर स्वतंत्र राष्ट्र के लिए एक राष्ट्रभाषा देश को एकता प्रदान कर सकती है और सुदृढ़ बना सकती है । देश के प्रगति के मार्ग पर अग्रसर करने के लिए आवश्यक है कि देश के एक कोने से दूसरे कोने तक सरल और सभी को समझ में आने वाली भाषा का प्रचलन हो । इसी उद्देश्य को समक्ष रख कर राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी की हार्दिक इच्छा थी, भारत वर्ष के लिए हिंदी राष्ट्रभाषा बने । लेकिन उनका यह उद्देश्य कदापि नहीं था कि देश की अन्य प्रादेशिक भाषाओं को मिटाकर या उनकी उपेक्षा कर के हिंदी को ही स्थान दिया जाये । बल्कि उनका असल अभिप्राय यह था

कि भारत की सभी प्रादेशिक भाषाओं को फलने-फूलने का पूर्ण अवसर प्रदान किया जाये । उनके साहित्य को विकसित किया जाये । और - तो - और सभी बच्चों को उनके मातृभाषा में ही शिक्षा दिये जाने की व्यवस्था की जाए । लेकिन देश के उत्थान के लिए देश को कन्याकुमारी से कश्मीर तक और गुजरात से अरूणाचल तक एक ही धागे में पिरोकर रखने के लिए एक-दूसरे की सभ्यता एवं संस्कृति से अवगत होने तथा आपसी प्रेम एवं स्नेह को सुदृढ़ करने के लिए एक भाषा का होना आवश्यक है । और वह देश की अधिकांश आबादी की भाषा हिंदी ही हो सकती है । राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी चाहते थे कि एकता को और प्रगति करने के लिए भारत की सभी भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग होना चाहिए । राष्ट्रपिता के समान विनोबा भावेजी का भी यह उद्देश्य कदापि नहीं था कि सभी प्रादेशिक भाषाएँ अपनी लिपि छोड़कर नागरी लिपि अपनाये बल्कि उनका अभिप्राय यह था कि राष्ट्रीय एकता के लिए "नागरी ही नहीं, नागरी भी चाहिए ।"

प्रस्तावना :-

हिंदी विश्व की सबसे बड़े गणराज्य भारत की राजभाषा है । हिंदी मात्र एक भाषा ही नहीं भारतीय संस्कृति की सबल, समर्थ और सशक्त संवाहिका भी है। भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में महात्मा गांधीजी ने राष्ट्रभाषा के रूप में इसकी पहचान कर इसे अपने आंदोलन का एक अंग बनाया था । हिंदी भारत में ही नहीं, भारत के बाहर भी विश्व के अनेक देशों में बोली, समझी, सराही और पढ़ाई भी जाती है । हिंदी आज विश्व भाषा बन चुकी है और मानें तो विश्व की सबसे बड़ी भाषाओं में इसका स्थान दूसरा है । यह भारत से बाहर मॉरिशस, फीजी, गुयाना, सूरीनाम एवं टोबेगो तथा दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में भी बोली जाती है।

हिंदी की लिपि देवनागरी है जो पिछले एक हजार वर्ष से हिंदी के लिए प्रयुक्त होती आ रही है । हमारे संविधान निर्माताओं ने इसे राजभाषा हिंदी की आधिकारिक लिपि के रूप में स्वीकार किया है । यह लिपि अपने सर्वाधिक गुणों के कारण केवल हिंदी की ही लिपि नहीं हैं, बल्कि भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित 22 भाषाओं में से संस्कृत, मराठी, नेपाली, बोडो, डोगरी तथा मैथिली भाषाओं की भी लिपि है । कोंकणी तथा संताली भाषाएँ भी इसे स्वीकार कर रही है। यह इसकी लोकप्रियता का प्रमाण नहीं तो क्या है ।

हमारी महान संस्कृति का प्राचीन वाङ्मय चाहे वह वेद पुराण, गीता, उपनिषद हो या रामायण, महाभारत जैसे महाकाव्य हो, आज नागरी लिपि में उपलब्ध है । बौद्ध और जैन साहित्य भी नागरी लिपि में ही मिलता है । इस प्रकार भाषा और संस्कृति की दृष्टि से नागरी लिपि का विशेष महत्त्व है । आज सूचना और प्रौद्योगिकी के युग में भी नागरी लिपि ने अपनी श्रेष्ठता और वैज्ञानिकता विश्व के सामने सिद्ध कर दी है । और इस लिपि को ही कम्प्यूटर के लिए सबसे उपयुक्त माना जाता है । नासा के प्रसिद्ध वैज्ञानिक रिक ब्रिग्स ने तो यह घोषित ही कर दिया है कि, संस्कृत भाषा और देवनागरी लिपि ही आदर्श लिपि है । इस प्रकार नागरी लिपि के रूप में, भारत विश्व की प्रगति में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकता है । शून्य का अविष्कार भी भारत में ही हुआ था, जो विश्व को भारत की सबसे बडी देन है । इस संदर्भ में अल्बर्ट आइंस्टीन जैसे वैज्ञानिक ने कहा भी था - "हम भारतीयों के बहुत ऋणी हैं, जिन्होंने हमे गिनना (गिनती) सिखाया ।"

नागरी लिपि और उसकी श्रेष्ठता के संबंध में इस प्रकार कहा जा सकता है कि - लिपि का सीधा संबंध भाषा से है । भाषा विचारों के आदान-प्रदान का साधन है । किसी भी भाषा को चिह्नों या संकतों द्वारा अंकित करने की व्यवस्थित प्रणाली ही लिपि है । लिपि एक प्रकार से दृश्य भाषा ही है । भाषा मौखिक एवं श्रव्य है, तो लिपि अंकित एवं दृश्य है । नागरी लिपि, जिसे देवनागरी लिपि भी कहा जाता है । भारत की प्राचीन लिपि ब्राह्मी से विकसित हुई है । यह लिपि इतनी

सक्षम एवं सार्थक है कि इसमें जो लिखा जाता है वही पढ़ा जाता है । और जो बोला जाता है वही लिखा जाता है । विश्व की ऐसी कौनसी भाषा या बोली है जो नागरी लिपि में नहीं लिखी जा सकती ? यह क्षमता अन्य किसी लिपि में शायद ही हो । इस सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि -

"जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि ।"

ऐसी ही क्षमता नागरी लिपि में भी है । सभी भाषाओं को नागरी में सरलता से लिखा और पढ़ा जा सकता है । लिप्यंतरण की दृष्टि से यह विश्व की सबसे श्रेष्ठ लिपि है ।

देवनागरी लिपि की विशेषताएँ :-

आज विश्व में चार बड़े लिपि समूह हैं । अरबी, चीनी, रोमन तथा ब्राह्मी समूह । नागरी लिपि ब्राह्मी लिपि परिवार की लिपि है । भारत की प्रायः सभी प्रमुख भाषाओं की लिपियां भी ब्राह्मी से ही विकसित हुई है ।

वैसे तो संसार की कोई भी लिपि पूर्ण वैज्ञानिक अथवा आदर्श लिपि होने का दावा नहीं कर सकती । फिर भी, देवनागरी लिपि में अपेक्षाकृत वे सब गुण हैं, जो संसार की अन्य किसी लिपि में दुर्लभ हैं । अनेक विदेशी विद्वानों ने भी नागरी लिपि को सर्वश्रेष्ठ लिपि बताया हैं । ब्यूलर, हार्नले, मैक्डानल, थामस तथा आइजेक टेलर आदि ने नागरी लिपि की वैज्ञानिकता की प्रशंसा की है । कहा जाता है कि रोमन लिपि की अवैज्ञानिकता से खिन्न होकर जॉर्ज बर्नार्ड शॉ जैसे अंग्रेजी के प्रसिद्ध विद्वान को भी अंग्रेजी की लिपि में सुधार की इतनी आवश्यकता महसूस हुई थी कि वे इसके लिए वसीयत भी करने को तैयार थे । स्वर-विज्ञान (फोनोग्राफी) के अनुसंधान कर्ता - आइजेक पिटमैन लिखते हैं - "संसार में यदि कोई पूर्ण अक्षर है तो वे देवनागरी के है ।" प्रो. मोनियर बिलियम्स ने कहा था - "देवनागरी अक्षरों से बढ़कर पूर्ण और उत्तम अक्षर दूसरे नहीं है ।" सर विलियम जॉन्स का मत है - "हमारी (रोमन) भाषा अंग्रेजी की वर्णमाला तथा वर्तनी अवैज्ञानिक तथा किसी रूप से हास्यास्पद भी है ।"

डॉ. ऑर्थर मैक्डॉनल ने संस्कृत साहित्य के इतिहास में लिखा है कि - "400 ई. पूर्व में पाणिनी के समय भारत ने लिपि को वैज्ञानिकता से समृद्ध कर विकास के उच्चतम सोपान पर प्रतिष्ठित किया, जब कि हम यूरोपियन लोग इस वैज्ञानिक युग में 2500 वर्ष बाद भी उस वर्णमाला को गले लगाए हुए हैं, जिसे ग्रीकों ने पुराने सेमेटिक लोगों से अपनाया था, जो हमारी भाषाओं के समस्त ध्वनि समुच्चय का प्रकाशन करने में असमर्थ है तथा तीन हजार साल पुराने अवैज्ञानिक स्वर-व्यंजन मिश्रण का बोझ अब भी पीठ पर लादे हुए हैं ।"

यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक लगता है कि अंग्रेजी में शब्द एक लिखा जाता हैं तो उसका उच्चारण एक होता है - जैसे नॉलेज (knowledge) पढ़ते है, परन्तु उसमें 'k' अक्षर का लोप पाया जाता है, उसी प्रकार Half (हाफ) इसमें भी 'L' अक्षर का, knite में 'k' का ऐसे बहुत से शब्द हैं जिसे लिखा एक जाता हैं तो पढ़ा एक जाता है । इस दृष्टि से इसमें वैज्ञानिकता का अभाव दिखाई देता है । वैज्ञानिकता का अगर हम विचार करें तो उसमें निम्नलिखित बातें होना आवश्यक माना जाता है ।

एक ध्वनि के एक ही लिपि चिह्न हो :-

नागरी लिपि में एक ध्वनि के लिए एक ही लिपि चिह्न है । यह विशेषता विश्व की अन्य लिपियों, जैसे रोमन तथा फारसी आदि में नहीं है । रोमन में 'क' ध्वनि के लिए कई वर्ण का प्रयोग किया जाता हैं, जैसे - Cat में 'C', Kite में 'K', Queen में 'Q', Christ में 'Ch', Back में 'CK' और अंशत: 'X' भी 'क' की ध्वनि देता है, जैसे 'OX' है । इस प्रकार एक ही ध्वनि को पाँच या छह प्रकार से लिखा जा सकता है । रोमन में 'स' ध्वनि के लिए 'सी' (C) का प्रयोग है, कहीं-कहीं 'S' का भी प्रयोग किया जाता है । जैसे - Cinema, City, Ceremony, Century आदि में 'C' का प्रयोग होता है और Six, Same, State में 'S' का प्रयोग होता है । अत: रोमन में एक वर्ष को एक निश्चित स्वनिक मूल्य नहीं दिया जा सकता, जब कि देवनागरी लिपि की विशेषता यही हैं कि यदि 'क' लिखा गया हैं, तो 'क' ही पढ़ा जाएगा ।

वैसे उर्दू की लिपि फारसी पर आधारित है । जहाँ 'ज' ध्वनि के लिए पांच वर्ण है जे, जुवाद, जोए और जाल । किस शब्द में 'ज' ध्वनि के लिए इन पाँचों में से कौनसा वर्ण प्रयुक्त होगा, यह तय कर पाना तब तक संभव नहीं होगा । जब तक कि प्रयोक्ता उस शब्द के परंपरागत रूप से परिचित न हो । उसी प्रकार 'अ' ध्वनि के लिए भी 'अलिफ' और 'ऐन' है । 'अलिफ' से 'आदमी' लिखा जाता है और 'ऐन' से 'औरत' । इसमें भी कोई वैज्ञानिकता नहीं है ।

एक लिपि चिह्न एक ही ध्वनि को व्यक्त करें :-

नागरी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें एक लिपि चिह्न एक ही ध्वनि को व्यक्त करता है, दूसरी को नहीं । रोमन में 'D' वर्ण 'ड़' की ध्वनि को व्यक्त करता है और 'द' की ध्वनि को भी व्यक्त करता है । उसी प्रकार 'T' वर्ण का भी 'ट' और 'त' दोनों ध्वनियों को व्यक्त करता है । 'G' वर्ण 'ज' और 'ग' दोनों ध्वनियों को व्यक्त करता है । 'U' वर्ण 'अ' और 'उ' को व्यक्त करता है । जैसे But और Put । फ्रेंच में भी लेखन और उच्चारण में भिन्नता है । जैसे Restaurant लिखा जाता है 'रेस्तोराँ' पढ़ा जाता है । इटालियन में 'Via' को 'विया' पढ़ा जाता है । और अंग्रेजी में 'वाया' । वहाँ Cinem को 'चिणमा' और Time की 'तीएम' बोला जाता है । इसलिए ध्वनि एवं लिपि में सामंजस्य महत्त्वपूर्ण होता है । उसके बिना हम वाक्य शुद्धिकरण कर ही नहीं सकते । इसलिए यह अत्यंत अनिवार्य माना जाता है ।

लिपि चिह्न के नाम उनकी ध्वनि के अनुरूप हो :-

नागरी की एक बड़ी विशेषता यह है कि जो लिखित चिह्न की पहचान है, वही उच्चारण होता है । अर्थात् 'लेखिम' ही 'ध्वनिम' है । 'क' को उसी रूप में पहचाना जाता है और वही उसका उच्चारण है । 'पतंग' में 'प' की ध्वनि और 'कमल' मे 'क' की ध्वनि मूल रूप से वही रहती है । रोमन लिपि में यह वैज्ञानिकता पायी नहीं जाती, जैसे 'एच' (H) की मूल ध्वनि में (ए+च) की ध्वनि है, किंतु शब्द में प्रयुक्त होने पर यह 'ह' या 'अ' की ध्वनि देता है । जैसे Horse 'हॉर्स' में 'ह' और Hours 'अवर्स' में 'अ' शब्द का उच्चारण होता है । इसी प्रकार W, 'व' की और Y 'य' की ध्वनि देते है । कुछ स्थितियों में तो रोमन वर्ण की द्वितीय ध्वनि का उच्चारण होता है, प्रथम का नही जैसे Lamp में L (एल) का प्रयोग 'ल' ध्वनि के रूप में होता है । प्रथम ध्वनि 'ए' के रूप में नहीं । इसी तरह Map में 'M' का प्रयोग 'म' ध्वनि के रूप में ही होता है । इसके विपरीत कुछ वर्ण अपनी प्रथम ध्वनि के रूप में ही उच्चारित होते हैं । जैसे Ball में 'बी' की ध्वनि 'B' ही रहती है ।

कुछ वर्ण आपस में मिलकर अलग ही ध्वनि के रूप में उच्चारित होते है, जैसे Pontion में (tio-श) है और Chart में (C+H) 'च' है । Champagne (शेम्पेन) में Ch 'स' की ध्वनि देते है और Character में Ch 'क' की ध्वनि का बोध कराते हैं । इसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं हैं ।

वैज्ञानिक लिपि में पर्याप्त लिपि चिह्न होने चाहिए :-

नागरी लिपि में लिपि चिह्नों की आवश्यक संख्या मौजूद है। आवश्यकतानुसार नए चिह्न भी शामिल कर लिए जाते हैं, जो इसकी विकासशील प्रकृति का गुण है । रोमन में आज तक वही 26 वर्ण है । जब कि ध्वनियाँ 42 से अधिक है, चीनी जैसी चित्रात्मक लिपि के लिए तो 50 हजार से भी अधिक चित्रों को ध्यान में रखना पडता है । रोमन और उर्दू में महाप्राण की ध्वनि के लिए अलग से लिपि चिह्न नहीं है । उर्दू में 'हे' वर्ण के चिह्न को और रोमन में 'H' वर्ण को जोड़कर महाप्राण बनाया जाता है । जैसे G+h मिलाकर 'घ' ध्वनि बनता है, किंतु 'छ़' ध्वनि के लिए (chh) लिखना पड़ता है, जो स्थान अधिक घेरता है । उच्चारण में भी कभी-कभी समस्या पैदा करता है । हिंदी में इसके लिए अलग-से महाप्राण वर्ग है । जैसे - ख, घ, छ़, झ, ठ़, ढ़, थ आदि ।

प्रत्येक लिपि चिह्न का प्रयोग उच्चारण में भी हो :-

नागरी लिपि की यह विशेषता है कि इसमें प्रत्येक लिपि चिह्न का प्रयोग होता है । हिंदी में अब अनावश्यक स्वर चिह्न हटा दिए गए है । जैसे 'ऋ' और 'ऌ' आदि । किंतु अंग्रेजी के कुछ़ शब्दों में अभी भी ऐसे लिपि चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, जिनका उनके उच्चारण में कोई स्थान नहीं है । जैसे Half में 'L' का उच्चारण होता ही नहीं है । इसी प्रकार Daughter में 'gh' वर्ण अब अनावश्यक रह गए हैं । Listen और Often में 'T' का प्रयोग नहीं होता। इसी प्रकार Leightenant (लेफ्टीनेट) तथा Psychology (सायकॉलॉजी) तथा Budget में (बजट) में अक्षर कुछ़ है, और उच्चारण कुछ़ है । क्या यह लिपि का दोष नहीं ?

फारसी और और उर्दू में भी कुछ़ ऐसे लिपि चिह्न प्रयुक्त होते हैं, जिनका उनकी वर्णमाला में स्थान नहीं है । जैसे बिल्कुल के लिए बालकुल लिखा जाता है और पढ़ा जाता है 'बिल्कुल' ।

मात्रा एवम् वर्ण चिह्नों में भिन्नता हो :-

नागरी लिपि एक ध्वन्यात्मक लिपि है । इसकी वर्णमाला बड़ी वैज्ञानिक है। इसमें स्वर की मात्राएँ अलग है । ऱ्हस्व और दीर्घ मात्राओं का भेद सुस्पष्ट है। यदि किसी स्वर को किसी व्यंजन के साथ मिलाकर लिखना है, तो उसकी मात्रा लगा दी जाती है । पूरा स्वर नहीं लिखा जाता । प्रत्येक व्यंजन के साथ 'अ' स्वर मिला होता है । जैसे क = क् + अ । इस प्रकार यह आक्षरिक लिपि है । रोमन लिपि में लिखे शब्द 'Kamal' को कमल, कमाल, कामल भी पढ़ा जा सकता है । परंतु नागरी लिपि में ऐसा नहीं होता । मात्राओं के कारण जगह की भी बचत होती है ।नागरी लिपि में मात्राएँ न होती तो कलम को (क्+अ+ल्+अ+म्+अ) इस प्रकार लिखा जाता । और इसके लिए फिर जगह भी ज्यादा लग सकती थी । परंतु मात्राओं के कारण कम जगह में लिखना संभव हो सका है । अंग्रेजी में 'राम' को 'Rama' लिखा जाएगा, जिसके लिए अधिक जगह लगती है । अंग्रेजी में मात्राएँ न होने से स्वर को पूर्ण रूप से लिखना पड़ता है । 'अच्छ़ा' शब्द रोमन में शुद्ध लिखा या पढ़ा जाना कठिन है । जैसे 'खानदान' (KHANDAN) शब्द 'खंड़न' बन जाता है ।

वर्णमाला व्यवस्थित हो :-

नागरी वर्णमाला में ध्वनियों का मुख के उच्चारणोपयोगी स्थानों के आधार पर वर्गीकरण किया गया है । पहले स्वरों के लिए लिपि चिह्न हैं, बाद में व्यंजनों के लिए । स्वरों में भी ऱ्हस्व और दीर्घ स्वरों के लिए अलग-अलग वर्ण है, जैसे - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ । रोमन, अरबी और फारसी लिपि में ऐसा नहीं है । वहाँ स्वर और व्यंजन अलग नहीं, बल्कि मिले हुए हैं । नागरी लिपि का प्रत्येक वर्ण चाहे वह 'स्वर' हो या 'व्यंजन' उसका निर्माण एक विशिष्ठ स्थान तथा स्थिति में होता है । वर्णों को कंठ, तालु, मूर्धा, दंत, एवम् ओष्ठ से निकलने वाली ध्वनि के आधार पर वर्गीकरण कर इसे पूर्ण वैज्ञानिकता प्रदान की गई । जो इस प्रकार है ङ

कंठ्य	-	क ख ग घ
तालव्य	-	च छ ज झ
मूर्धन्य	-	ट ठ ड़ ढ़
दंत्य	-	त थ द ध
ओष्ठ्य	-	प फ ब भ
नासिक्य	-	ङ ञ ण न म
अंतस्थ	-	य र ल व
ऊष्म	-	श ष स

('ह' स्वर - यंत्रीय व्यंजन है)

इनके अतिरिक्त हिंदी में कुछ़ संयुक्त व्यंजन भी है, जिनका आधार वैज्ञानिक है । जैसे ङ

क्ष	-	(क् + ष)
त्र	-	(त् + र)
ज्ञ	-	(ज + ञ)
श्र	-	(श् + र)

मानकीकरण :-

देवनागरी लिपि आरंभ से ही एक विकासशील लिपि रही है । समय-समय पर इसमें आवश्यकतानुसार संवर्धन और परिवर्तन होता रहा है । नई ध्वनियों के अनुकूल ही इसके वर्णों में बदलाव आता रहा है । इसके कुछ वर्ण में पहले एकरूपता नहीं थी और वे कई प्रकार से लिखे जाते थे । अब उनका एक मानकरूप निश्चित कर दिया गया है । जैसे -

पुराना रूप	मान्य रूप
अ	अ
रव	ख
छ	छ
झ	झ
भ	भ
राा	ण
ध	ध

हाल ही में भारत सरकार की संस्था भारतीय मानक ब्यूरो ने देवनागरी लिपि एवम् हिंदी वर्तनी के मानकीकरण की दिशा में नई पहल की है और 11 तथा 19 जुलाई 2012 की बैठक में इसे अंतिम रूप देने का प्रयास किया गया । जिसमें भारत सरकार के कई कार्यालयों ने भाग लिया ।

लिपि सरल और स्पष्ट होनी चाहिए :-

एक वर्ण एक ही प्रकार से लिखा जाए । रोमन लिपि में लिखे जाने वाले और पुस्तकों में छपनेवाले रूपों में भिन्नता है । दूसरे उनमें भी छोटे (Small) तथा बड़े (Capital) लिपि चिह्नों में भिन्नता है ।

लिप्यंतरण और प्रतिलेखन :-

इस दृष्टि से यह लिपि सबसे उपयुक्त है । इसमें निहित अपार संभावनाओं का उपयोग कर हम भूमंडलीकृत होते हुए विश्व की सैंकड़ों भाषाओं के साथ न्याय कर सकेगें और देवनागरी लिपि विश्व की भाषाओं का माध्यम और उनकी कुंजी बन सकेगी । अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, इतावली आदि सभी यूरोपीय भाषाओं के उच्चारण सुरक्षित रख सकते हैं। उच्चारण की भिन्नता को देखिए, अंग्रेजी में 'D' और 'T' की ध्वनि क्रम से 'ड' औ 'ट' होती है । किंतु वही इतालवी में जाकर 'द' और 'त' हो जाती है । इस लिप्यंतरण प्रकार विश्व की भाषाओं के सही उच्चारण का एक मात्र उपाय उनका नागरी लिपि में लिप्यंतरण ही हो सकता है । मानव-कल्याण की दिशा में यह प्रक्रिया निश्चय ही महत्त्वपूर्ण है ।

देशी-विदेशी भाषाओं के शिक्षण की दृष्टि से भी इस लिपि के सामर्थ्य का उपयोग किया जाए, क्योंकि रोमन जब लिप्यंतरण की दृष्टि से ही उपयुक्त नहीं है, तब उसके जरिए किसी अन्य भाषा के शिक्षा की कल्पना ही कैसे संभव है ?

निष्कर्ष :-

अंत में इतना कहा जा सकता है कि - आज यूरोप और अमरिका आदि में कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर के विकास में जो शोधकार्य हो रहे हैं, उनमें भी देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता ने विशेषज्ञों का ध्यान आकृष्ट किया है । देवनागरी लिपि की उपयुक्तता को लेकर डॉ. रिंग ब्रिग्स, डॉ. व्यास हुस्टन और डॉ. डेविड लेविन आदि विद्वानों ने अपने आलेखों में व्यापक रूप से लिखा है । इस प्रकार समस्त विश्व को एक सूत्र में तथा पारस्परिक आदान-प्रदान के लिए रोमन सहित (देवनागरी को छोड़कर) अन्य कोई भी लिपि कुछ नहीं कर सकती क्योंकि उनकी अपूर्णता व अवैज्ञानिकता स्वतः स्पष्ट है ।

देवनागरी लिपि ही ऐसी एक मात्र लिपि है जो विश्व की समस्त भाषाओं को लिखित रूप में व्यक्त कर सकती है । परिणामतः देवनागरी लिपि के माध्यम से चीनी, जापानी, रूसी, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, अरबी, जर्मन, फ्रेंच आदि भाषाओं को आसानी से आत्मसात किया जा सकता है । अतः देवनागरी की उपादेयता व वैज्ञानिकता निःसंदेह है । देवनागरी लिपि के माध्यम से ही **"एक विश्व एक मानव"** की कल्पना को मूर्त रूप दिया जा सकेगा । वर्तमान में देवनागरी वस्तुतः विश्व की एकमात्र सर्वाधिक व्यवस्थित एवम् वैज्ञानिक लिपि है । इसमें एक अमूल्य धरोहर है, जिसका प्रयोग विश्वनागरी के रूप में भी सरलता से किया जा सकता है । और अन्य भाषाओं ने भी देवनागरी को अपना लिया तो उनके लिए वह **सुविधाजनक रहेगा** ।

संदर्भ ग्रंथ :

1) हिंदी भाषा - अध्यापन : डॉ. आर. पी. पाठक, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2013, पृष्ठ क्रमांक 2, 3, 4 ।
2) मानक - व्यावहारिक - हिंदी व्याकरण तथा भाषा - बोध - डॉ. सन्तशरण शर्मा, अमर प्रकाशन, मथुरा, प्रथम संस्करण, 2008, पृष्ठ क्रमांक 29, 30, 32, 33, 34।
3) हिंदी की वर्तनी तथा शब्द विश्लेषण, आचार्य किशोरीदास बाजपेयी, वाणी प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, 1997, पृष्ठ क्रमांक 90, 91, 110, 111।
4) प्रायोगिक हिंदी व्याकरण, डॉ. राम गोपाल सिंह जादौन, विस्टा पब्लिशर्स, इंडिया, प्रथम संस्करण, 2013, पृष्ठ क्रमांक 2, 4, 5, 6, 7 ।
5) व्यावहारिक हिंदी व्याकरण, डॉ. नामदेव उतकर, चंद्रलोक प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1999, पृष्ठ क्रमांक 20, 21, 22, 23 ।
6) संक्षिप्त हिंदी व्याकरण, कामता प्रसाद गुरू, पृष्ठ क्रमांक 4।
7) हिंदी व्याकरण, कामता प्रसाद गुरू, मलिक एण्ड कम्पनी, जयपुर, प्रथम संस्करण, 2011, पृष्ठ क्रमांक 92, 93, 94, 95 ।
8) वाग्धारा, राष्ट्रीय हिंदी सेवी महासंघ, इंदौर, जनवरी-मार्च, 2008, पूर्णांक-26, पृष्ठ क्रमांक 12 ।
9) नागरी संगम - नागरी लिपि परिषद, नई दिल्ली, अंक-115, जुलाई-सितम्बर, 2007, पृष्ठ क्रमांक 11 ।